

Padma Shri



SHRI H. R. KESHAVAMURTHY

Shri H. R. Keshavamurthy is a versatile artist in the art form called 'Gamaka'. The art of gamaka (meaningful and melodious rendering of verses from classical epics) has been there in our land since the times of Ramayana. He has been recognized globally for his style of singing. His style is proven to be Keshvamurthy Gharana just like Varanasi, Kanpur, Jaipur, Mumbai, Puna gharanas.

2. Born on 22nd February, 1934 to Vedabramha Ramaswamy Shastry and Lakshmiddevamma. Vedabrahma, Shri Keshvamurthy learnt his linguistic scholarship from his father who was a pouranika (used to give discourses on epics). His initial training in gamaka was under the tutelage of Sri Venkateshaiah, a senior Gamaki of yester years. He hails from Hosahalli, a tiny hamlet in Shivamogga district of Karnataka. This village is renowned as Gamaka Grama all over the state. This renown is owing to his achievements.

3. During the last seventy-five years, Shri Keshavamurthy has given more than 5,000 programmes, singing compositions of ancient as well as contemporary composers. His programmes with great Gamaka artistes like vid. Lakshmi keshava shastry, Padma shri Awardee Mathoor Krishnamurthi, vid. Markandeya Avadhani are heard and watched by hundreds and thousands of people all over Karnataka and Kannada associations all over India. The number of students whom he has been training at home free of cost exceeds hundred.

4. The contribution of Shri Keshavamurthy in extending and expanding the scope of the art of gamaka that grew over ages is immense and unique. He has been appreciated by music doyens like Padmabhusan Lalgudi Jayaraman who heard. Sri Keshavamurthy sing verses from kumaravyasas bharatha, jaiminis bharatha, pampas bharatha, rannas gadayuddha, harishchandra kavya, besides vachanas, mankutimannakagga, devotional songs, hymns, ramayana, mahabharatha, bhagavatha, kumarasambhava, raghuvamsha in Sanskrit in the gamaka style. He has never commercialized his art. HMT brought out the Mahabharata rendering in more than one hundred cassettes with his singing and Padma Shri Awardee Mathoor Krishnamurthi providing commentary on the singing. The success of this prompted Udaya TV to broadcast his singing with Padma Shri Awardee Mathoor Krishnamurthi's commentary – everyday in the morning for over 15 years non-stop. He continued the gamaka programme on Udaya TV with vid. Markandeya Avadhani which concluded in April 2016. The entire Kumara Vyasa Bharata was recorded by him with vid. Lakshmi Keshava Sastry in 135 cassettes for the first time during the early 70's which has been used as an authority for higher studies by postgraduates and Phd students at various universities.

5. Shri Keshavamurthy has been a source of motivation and leadership for the construction of Gamaka Bhavana at Hosahalli – for which his donation was the initiation, honouring veteran Gamaka Artists for the past three decades, gamaka saptaha (a weeklong celebration) and competition for youngsters. His personality is further adorned by simplicity, friendly demeanor, his nature of not fingering at others and his sense of humor.

6. Shri Keshavamurthy has received numerous awards and citations. Major ones among them are - The prestigious Karnataka Rajyotsava award; the Kumara Vyasa Prashasti - the highest award given to a gamaka artiste. (He is the very first artiste to receive this award); Artist of the year - 1994 from Karnataka Sangeeta Nritya academy; Gamaka sindhu - 2000 - from Attimabbe pratishtana, Gamaka gandharva - 1985; Gamaka kesari - 2009 from Shanti theosophical Society; Gamaka Chudamani - 2012 from his Holiness Sri Sri Jayendra Saraswati Mahaswamiji and many more.

पद्म श्री



श्री एच. आर. केशवमूर्ति

श्री एच. आर. केशवमूर्ति 'गमक' गायन विधा के एक बहुमुखी कलाकार हैं। हमारे देश में गमक कला (पौराणिक महाकाव्यों के छंदों का अर्थपूर्ण और मधुर गायन) रामायण काल से ही प्रचलित है। वह अपनी गायन शैली के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। उनकी शैली वाराणसी, कानपुर, जयपुर, मुंबई, पूना घरानों की तरह ही केशवमूर्ति घराने के रूप में जानी जाती है।

2. 22 फरवरी, 1934 को वेदब्रह्म रामास्वामी शास्त्री और लक्ष्मीदेवम्मा के यहाँ जन्में, श्री केशवमूर्ति ने अपने पिता से भाषायी ज्ञान सीखा जो एक पौराणिक कथा वाचक (वह महाकाव्यों पर प्रवचन देते थे) थे। उन्होंने श्री वेंकटेशैया से गमक का प्रारंभिक प्रशिक्षण प्राप्त किया, जो उस समय एक वरिष्ठ गमक गायक थे। वह कर्नाटक के शिवमोगा जिले के एक छोटे से गांव होसाहल्ली के रहने वाले हैं। यह गांव पूरे राज्य में गमक ग्राम के नाम से प्रसिद्ध है। इसका श्रेय उनकी उपलब्धियों को जाता है।

3. विगत पचहत्तर वर्षों के दौरान, श्री केशवमूर्ति ने 5,000 से अधिक कार्यक्रम किए हैं, जिनमें उन्होंने प्राचीन और समकालीन संगीतकारों की रचनाओं का गायन किया है। विदुषी लक्ष्मी केशवशास्त्री, पद्मश्री पुरस्कार प्राप्तकर्ता मथूर कृष्णमूर्ति, विद्वान मार्कंडेय अवधानी जैसे महान गमक कलाकारों के साथ उनके कार्यक्रम पूरे कर्नाटक और पूरे भारत के कन्नड़ संघों में हजारों लोगों द्वारा सुने और देखे जाते हैं। वह सौ से अधिक छात्रों को घर पर निःशुल्क शिक्षा दे रहे हैं।

4. प्राचीन काल से विकसित गमक कला क्षेत्र को विस्तार देने में श्री केशवमूर्ति का असीम और अद्वितीय योगदान है। उनकी सराहना वरिष्ठ संगीतज्ञ पद्मभूषण पुरस्कार प्राप्तकर्ता लालगुडी जयरामन करते रहे हैं। वे वचन, मनकुटिम्मन्नकग्गा, भक्ति गीत, भजन, रामायण, महाभारत, भागवत, कुमारसंभव, रघुवंशम आदि गमक शैली में संस्कृत के अलावा कुमारव्यास भारत, जैमिनि भारत, पंपा भारत, रण गदायुद्ध, हरिश्चंद्र काव्य के छंदों का गायन करते हैं। उन्होंने अपनी कला का कभी व्यवसायीकरण नहीं किया। एचएमवी ने उनके गायन और पद्मश्री पुरस्कृत मथूर कृष्णमूर्ति के गायन पर व्याख्या के साथ एक सौ से अधिक कैसेट में महाभारत का निर्माण किया। इसकी सफलता के बाद उदय टीवी उनके गायन को पद्मश्री पुरस्कार प्राप्तकर्ता, मथूर कृष्णमूर्ति की व्याख्या के साथ प्रसारित करने के लिए प्रेरित हुआ और वह लगातार 15 वर्षों से अधिक समय तक प्रतिदिन इसका प्रसारण करता रहा। उन्होंने विद्वान मार्कंडेय अवधानी के साथ उदय टीवी पर गमक कार्यक्रम जारी रखा, जो अप्रैल 2016 तक चला। उन्होंने 70 के दशक की शुरुआत में लक्ष्मी केशवशास्त्री के साथ संपूर्ण कुमार व्यास भारत को पहली बार 135 कैसेट में रिकॉर्ड किया, जिसका प्रयोग विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर और पीएच.डी छात्रों द्वारा उच्च अध्ययन के लिए एक प्रामाणिक स्रोत के रूप में किया जाता है।

5. श्री केशवमूर्ति होसाहल्ली में गमक भवन के निर्माण के लिए प्रेरणा के स्रोत और नेतृत्वकर्ता रहे हैं — जिसके लिए दान दीक्षा था, पिछले तीन दशकों से अनुभवी गमक कलाकारों को सम्मानित करना या गमक सप्ताह (एक सप्ताह तक चलने वाला उत्सव) का आयोजन और युवाओं के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन। सादगी, मिलनसार व्यवहार, दूसरों की बुराई न करने वाली प्रकृति और विनोदप्रियता उनके व्यक्तित्व के गुण हैं।

6. श्री केशवमूर्ति को अनेक पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुए हैं, उनमें से प्रमुख हैं — प्रतिष्ठित कर्नाटक राज्योत्सव पुरस्कार; कुमार व्यास प्रशस्ति— गमक कलाकार को दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार; (वह यह पुरस्कार पाने वाले पहले कलाकार हैं); कर्नाटक संगीत नृत्य अकादमी का वर्ष का कलाकार—1994; अतिम्बे प्रतिष्ठान से गमक सिंधु — 2000; गमक गंधर्व —1985; शांति थियोसोफिकल सोसायटी का गमक केसरी — 2009; पूज्य श्री श्री जयेंद्र सरस्वती महास्वामीजी से गमक चूड़ामणि — 2012 आदि।